

पीरू सिंह शेखावत

अंतिम सांस तक दिखाया अदम्य साहस

जन्म 20 मई 1918, मृत्यु : 18 जुलाई 1948

परमवीर चक्र विजेता (मरणोपरांत) पीरू सिंह। देश की रक्षा के लिए मर मिटे और अपने प्राणों की बाजी लगाकर देश की रक्षा की। 1948 के युद्ध में पाकिस्तानी बंकर को तबाह कर अनुकरणीय साहसिक कार्य करके भारत की विजय में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। अंतिम सांस तक इस युद्ध में अदम्य साहस के साथ दुश्मनों को धूल चटाकर तिरंगे का मान बढ़ाया। करीब 75 साल बाद आज भी जिनका बलिदान हर भारतीयों के लिए स्मरणीय है। 30 वर्ष की अल्पायु में ही वह शहीद हो गए और छोटी सी उम्र में बड़ी कहानी बन कर अब भी हमारे साथ हैं पीरू सिंह...

पीरू सिंह का जन्म 20 मई 1918 को राजस्थान के चुरू स्थित रामपुरा गांव में हुआ था। सात भाई-बहनों में से एक पीरू को सैनिकों का जीवन हमेशा आकर्षित करता था। बचपन में भी खेतों में काम करना, शिकार करना, जंगलों में घूमना उन्हें अच्छा लगता था। उनका पढ़ाई में मन नहीं लगता था इसलिए स्कूल छोड़ दिया। 18 वर्ष की उम्र में 20 मई 1936 को वे सेना में भर्ती हुए। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद कॉमनवेल्थ ऑक्यूपेशनल फोर्सेज के साथ काम करने के लिए ये जापान भी गए। 1947 में वापस देश लौटे और राजपूताना राइफल्स भेज दिए गए।

1948 में जब पाकिस्तानी फौज ने पठान कबायलियों के साथ मिल कर कश्मीर पर आक्रमण कर दिया तो उनका सामना करने के लिए राजपूताना राइफल्स में कंपनी हवलदार मेजर पीरू सिंह को तैनात किया गया। युद्ध के दौरान पीरू सिंह ने अदम्य साहस का परिचय दिया। 18 जुलाई 1948 को उनकी बटालियन ने दारापरी की नुकीली रिज पर हमला बोल दिया। दारापरी कश्मीर के टिथवाल सेक्टर में स्थित है और इसकी ऊंचाई 11,481 फीट है। जब भारतीय सैनिक आगे बढ़े तो गोलियों की बौछार होने लगी। पीरू सिंह दुश्मनों की गोलियों की मार से खुद को बचाते हुए आगे निकलते रहे और मशीनगन चलाने वाले सिपाहियों पर अचानक संगीन से हमला कर दिया।

वहां पीरू सिंह अकेले थे लेकिन उन्होंने हिम्मत नहीं हारी। वे दूसरे बंकर तक गए। उधर इनकी हर हरकत पर बचे हुए पाकिस्तानी सैनिकों की नजरें थीं। उन्होंने ग्रेनेड से हमला बोला। पीरू सिंह बुरी तरह घायल हो गए और उनकी आंखें बंद होने लगीं, खून तेजी से बहने लगा। फिर भी उन्होंने पूरे आत्मबल और अपनी पूरी ताकत से हथगोले प्रतिपक्षी की बंकर की ओर फेंके। उधर तेज धमाका हुआ और पाकिस्तानी सैनिक शांत हो गए। इधर पीरू सिंह की भी आंखें बंद हो गई। पीरू सिंह को मरणोपरांत परमवीर चक्र प्रदान किया गया। उनकी टुकड़ी 6 राजपूताना राइफल्स हर वर्ष इस बहादुर सिपाही की याद में 'बैटल ऑनर ऑफ दारापरी' स्मरणोत्सव मनाती है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 7 जुलाई 2018 को जयपुर में सार्वजनिक बैठक को संबोधित करते हुए परमवीर चक्र विजेता पीरू सिंह शेखावत को याद किया था और कहा था, "इस महान बलिदानी को मेरा शत-शत नमन है। हमारा राष्ट्र ऐसे ही बलिदानियों की वीरता, शौर्य और राष्ट्रभक्ति के दम पर आज दुनिया के सामने सिर उठाकर खड़ा हुआ है।" पराक्रम दिवस के अवसर पर 23 जनवरी 2023 को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अंडमान और निकोबार द्वीप समूह के 21 सबसे बड़े अनाम द्वीपों का नामकरण 21 परमवीर चक्र विजेताओं के नाम पर किया था। इसमें परमवीर चक्र विजेता पीरू सिंह के नाम पर भी एक द्वीप का नाम रखा गया। ●